E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2021; 3(1): 369-372
Received: 10-11-2020
Accepted: 16-12-2020

नन्द कुमार झा
शोधार्थी शिक्षा, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

डॉ. अखिलेश कुमार श्रीवास्तव
प्राचार्य, श्रीराम कालेज, रौरा जिला रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
नन्द कुमार झा
शोधार्थी शिक्षा, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

सतना जिले के शासकीय एवं निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की आकांक्षा स्तर का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

नन्द कुमार झा एवं डॉ. अखिलेश कुमार श्रीवास्तव

सारांश
प्रस्तुत शोध पत्र सतना जिले के शासकीय एवं निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की आकांक्षा स्तर का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन पर आधारित है। शोधकार्य में समष्टि के रूप में सतना जिले के समस्त उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक–शिक्षिकाओं तथा विद्यार्थियों की कुल संख्या होगी। चूंकि समस्त समष्टि पर शोध कार्य करना असंभव नही, पर कठिन है इसलिए शोधार्थी ने समष्टि से उचित इकाईयों का चयन हेतु संभाव्य – आदर्श की यादृच्छिक विधि की लाटरी विधि का प्रयोग करके 100 शिक्षक–शिक्षिकाओं तथा 500 विद्यार्थियों का चयन किया गया है। शोध क्षेत्र के शासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की आकांक्षा स्तर का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का स्तर औसत 33.28 तथा मानक विचलन 7.09 है। निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की आकांक्षा स्तर का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का स्तर औसत 32.68 तथा मानक विचलन 6.94 है। दोनों समूहों के मध्यमानों में पाये जाने वाले सार्थकता की जाँच के लिए क्रान्तिक अनुपात परीक्षण (C.R. Test) किया गया, जिसमें CR का मान 095 प्राप्त हुआ जो 0.05 सार्थकता स्तर के मान 1.64 तथा 0.01 सार्थकता स्तर के मान 2.33 से कम है। अतः शोध क्षेत्र के शासकीय एवं निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की आकांक्षा स्तर का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

मुख्यशब्दः सतना जिला, शासकीय एवं निजी उच्च माध्यमिक विद्यालय, आकांक्षा स्तर, शैक्षिक उपलब्धि।

1. प्रस्तावना
आज के प्रतिस्पर्द्धात्मक युग में यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा, कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के लिए उनके व्यक्तित्व के एक अति महत्वपूर्ण पक्ष आकांक्षा स्तर पर भी ध्यान दिया जाय। अतः शिक्षा ही वह सशक्त माध्यम है, जो किशोरों के सर्वांगीण विकास के लिए उत्तरदायी है। इसी सन्दर्भ में भारतीय शिक्षा आयोग (1964–66) के कथन से और अधिक स्पष्ट हो जाता है, "कि भारत के भविष्य का निर्माण उसकी कक्षाओं में हो रहा है"। शिक्षा के सम्बन्ध में एक उपयुक्त उदाहरण जापान का दिया जा सकता है, जो द्वितीय विश्वयुद्ध में दो परमाणु बमों का दंश झेलने के बाद भी आज अपनी अच्छी शिक्षा व्यवस्था एवं प्रशासन के कारण ही विश्व में एक नई शक्ति के रूप में पुनः स्थापित हुआ।

व्यक्तियों के व्यक्तित्व के निर्घारण में आकांक्षा का महत्वपूर्ण स्थान होता है। आकांक्षा के समानार्थी के रुप में महत्वाकांक्षा, इच्छा एवं लालसा जैसे शब्दों का प्रयोग किया जाता है। व्यक्तियों की समस्त चेष्टाओं और भावनाओं को उत्पन्न करने की मन की सूक्ष्म शक्ति को शाब्दिक अर्थ में 'इच्छा' कहा जाता है। व्यक्तियों की जागरूक चेतना ही इच्छा व आकांक्षा है जो अपने एक रूप में मनुष्य में अपरिमित उत्साह भर कर उसे सक्रिय बनाती है। व्यक्तियों के उत्साह हीन मन के द्वारा किया गया प्रयास असफल हो जाता है, इसलिए काम करने से पहले अभिप्रेरित वातावरण तैयार करना आवश्यक होता है, जिसे आकांक्षा कहा जाता है।

किशोरावस्था में अत्यधिक संवेगात्मक उथल–पुथल के कारण के जीवन का सबसे कठिनकाल भी माना गया है किशोर शारीरिक एवं मानसिक रूप से बहुत ही शक्तिशाली एवं सक्रिय होते है पर आकांक्षा स्तर के दृष्टिकोण से अस्थिर। माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की आयु प्रायः 14 से 18 वर्ष के मध्य होती है। अस्थाना (2006)[1] ने निष्कर्ष में पाया कि माध्यमिक स्तर छात्र एवं छात्राओं के लक्ष्य भिन्नता प्राप्तांक में सार्थक अन्तर नही पाया गया। जबकि उपलब्धि भिन्नता प्राप्तांकों में सार्थक अन्तर पाया गया। लेकिन लक्ष्य प्राप्ति के कुल प्रयास प्राप्तांक में सार्थक नही पाया गया। सिंह (2012)[2] ने स्नातक स्तर पर कला वर्ग, विज्ञान वर्ग एवं वाणिज्य वर्ग के विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर पाया गया। माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को सांवेगात्मक अस्थिरता, तनाव का सामना करना पड़ता है।

क्योंकि उच्च शैक्षिक उपलब्धि वाले किशोर समाज में स्थान एवं कैरियर के प्रति चिन्तित रहते हैं। यदि किशोरों के आकांक्षा स्तर का विकास सही ढंग से नही होगा, तो वह सही निर्णय लेने में सक्षम नही होगें। सामाजिक दृष्टि से देखा जाय, तो सामाजिक मूल्यों, समाज के आदर्शो के पालन में आकांक्षा स्तर काफी हद तक उत्तरदायी है। किशोरों में वांछित आदतों का निर्माण करने, आवांछित आदतों को दूर करने तथा सन्तुलित व्यकित्व का निर्माण करने के लिए मनोवैज्ञानिक दृष्टि से अध्ययन का विशेष महत्व है। किशोरों की समस्याओं की पहचान करके तथा उनके आकांक्षा स्तर का विकास करके लक्ष्य निर्धारण में उनका मार्गदर्शन किया जा सकता है।

2. अध्ययन की आवश्यकता

आकांक्षायें एक प्रकार से निर्देश बिन्दु हैं, जो कि प्रत्येक व्यक्ति के पूरे जीवन और उसके कृत्यक प्रारूप को प्रभावित करते हैं। औद्योगिक रूप से विकासशील समाज में उच्च–आकांक्षाओं को प्रभावशाली सांस्कृतिक मूल्यों की सफलता के शब्दों में लिया जाता है। आकांक्षायें व्यक्ति के अहम् आधारित लक्ष्य होते हैं, जिन्हें वह अपने लिये निर्धारित करता है। अहम् पर आधारित आकांक्षायें उसके व्यवहार के क्षेत्र से अधिक सम्बन्धित होती है, जो उसके लिये महत्वपूर्ण होती है। शोधार्थी द्वारा चयनित शोध कार्य इस क्षेत्र में पूर्णतः नवीन है जो शिक्षा के क्षेत्र में बहुत ही उपयोगी व महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।

3. उद्देश्य

प्रस्तुत शोध कार्य निम्नलिखित उद्दश्यों को ध्यान मे रखकर किया गया है :–

- सतना जिले में शासकीय एवं निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों की जानकारी प्राप्त करना।
- शोध क्षेत्र के शासकीय एवं निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की आकांक्षा स्तर का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

4. शोध की परिकल्पनाएँ

अनुसन्धानकर्ता को यदि दो समष्टियों में किसी गुण के माध्य की मापों के अन्तर की अनुसन्धान परिकल्पना की प्रामाणिकता मात्र उन न्यादर्शों के माध्य फलांकों के आधार पर करता है। अनुसन्धानकर्ता के लिए चूँकि सम्पूर्ण समष्टि का मापन करना सम्भव नहीं होता है। अतः इस परिस्थिति में एक सांख्यिकीविद् यह सुझाव देता है कि दोनों समष्टियों में उस गुण का शून्य अन्तर है तथा जो अन्तर उनमें आया है, वह प्रतिचयन की त्रुटि अथवा संयोग के कारण ही आया है। अतः इस प्रकार की परिकल्पना को शून्य परिकल्पना कहा जाता है।

शोध कार्य की परिकल्पना निम्नवत् है–

1. शोध क्षेत्र के शासकीय एवं निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की आकांक्षा स्तर का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

5. शोध समस्या का सीमांकन

प्रस्तुत शोध कार्य में समय, व्यय, परिश्रम एवं साधनों को ध्यान में रखते हुए शोध अध्ययन का सीमांकन किया गया है जिससे निर्धारित उद्देश्य को प्राप्त किया जा सके शोध क्षेत्र का सीमांकन निम्न प्रकार किया जा सकेगा।

1. शोधकर्ता ने अपने कार्य में केवल भारत की मध्यप्रदेश राज्य के सतना जिले को समष्टि के रूप में चयन किया गया है।
2. शोधकर्ता ने समष्टि में न्यादर्श के रूप में सतना जिले के उच्च माध्यमिक विद्यालयों को ही चुनाव किया गया है।
3. न्यादर्श के रूप में उच्च माध्यमकि विद्यालयों में 100 शिक्षक–शिक्षिकाओं (50 शिक्षक + 50 शिक्षिकाएँ) एवं 500 विद्यार्थियों को (250 छात्र + 250 छात्राएँ) चयन किया गया।

6. अध्ययन विधि

- **सर्वेक्षण अध्ययन विधिः** सर्वेक्षण अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसके द्वारा शोध समस्या के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित आंकड़ों का संग्रहण किया जाता है। आंकड़े मुख्य तथा वर्तमान स्तर का निर्धारण, वर्तमान स्तर की मान्य स्तर से तुलना, तथा वर्तमान स्तर को विकसित करने में महत्वपूर्ण उपादान होते हैं। सर्वेक्षण में व्यक्ति की अपेक्षा तथ्यों, परिस्थितियों तथा गणनाओं को प्राथमिकता दी जाती है।
- **साख्यिकीय विधिः** सर्वेक्षण विधि से प्राप्त ऑकड़ो का वर्गीकरण एवं सारणीयन किया गया है। जिनकी व्याख्या एवं विश्लेषण हेतु, सांख्यकीय विधियॉ प्रयोग में लाई गयी है। प्रस्तुत शोधकार्य में परिकल्पनाओं का परीक्षण सांख्यकीय विधियों द्वारा करने के लिये– डमंदए प्रतिशत (%), S.D., 't' Test आदि प्रयोग किये गये है, साथ ही गुणात्मक विश्लेषण पर भी ध्यान रखा गया हैं।

7. शोध उपकरण

शोधार्थी ने न्यादर्श में चयनित शासकीय एवं निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की आकांक्षा स्तर का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मापन हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली व परीक्षाफल के आधार पर किया गया है।

8. पूर्व अध्ययन समीक्षा

पूर्ववर्ती अध्ययन से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सबन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोशों, पत्र–पत्रिकाओं, शोध पत्रों तथा अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निमार्ण तथा शोध कार्य करने में सहायता मिलती है इनमें से मुख्य रूप से सिंह, अस्थाना, पंकज (2006)[1], सिंह, राम बाबू (2012)[2], पाण्डेय, के.पी., (1985)[3], गुप्ता एस.पी. (2001)[4], मेहता, सी. (1970)[5], निगम, बी.के. तथा शर्मा, एस.आर. (1993)[6], सिडाना, अशोक कुमार एवं साहनी, सारिका (2019)[7] एवं कुशवाहा, उमाशंकर एवं श्रीवास्तव, डॉ. अखिलेश कुमार (2021)[8] ने शोध विधि एवं शासकीय एवं निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की आकांक्षा स्तर का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित कार्य किये है।

9. सतना जिले का सामान्य परिचय

सतना जिला 23.58°–25.12° उत्तरी अक्षांश 80.12 – 81.23° पूर्वी देशान्तर पर स्थिति है। जिले समुद्र तल से ऊँचाई 317 मी. है, नागौद 626 मी., अमरपाटन और मैहर 537.06 मीटर है। सतना मध्यप्रदेश के उत्तर पूर्वी सीमा के मध्य स्थित वर्तमान रीवा संभाग का एक महत्वपूर्ण व्यवसायिक एवं औद्योगिक प्रधान जिला है। जिले के उत्तर में उत्तर प्रदेश का बाँदा जिला पूर्व में रीवा एवं सीधी जिला, दक्षिण में शहडोल व जबलपुर जिला, तथा पश्चिम में पन्ना जिला स्थित है। जिला अपनी धार्मिक विरासतों, औद्योगिक संस्थानों, सांस्कृतिक ऐतिहासिक परिदृष्यों, प्रमुख वनोपज एवं खनिज के कारण सर्वोच्च शिखर पर है।

10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की

वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

परिकल्पना क्र. 1: शोध क्षेत्र के शासकीय एवं निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की आकांक्षा स्तर का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

सारणी 1: शोध क्षेत्र के शासकीय एवं निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की आकांक्षा स्तर का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

क्र.	प्राप्तांक की स्थिति	शासकीय एवं निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की आकांक्षा स्तर का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थकता का स्तर			
		शासकीय		निजी	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	0 अंक से ऊपर किन्तु 20 अंक से कम (शिक्षकों की आकांक्षा स्तर का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि)	0	0.00	1	0.40
2.	20 अंक से अधिक किन्तु 30 अंक से कम (शिक्षकों की आकांक्षा स्तर का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि)	88	35.20	93	37.20
3.	30 अंक से अधिक किन्तु 40 अंक से कम (शिक्षकों की आकांक्षा स्तर का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि)	117	46.80	119	47.60
4.	40 अंक से अधिक किन्तु 50 अंक से कम (शिक्षकों की आकांक्षा स्तर का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि)	45	18.00	37	14.80

विश्लेषण एवं व्याख्या

उपरोक्त सारणी क्रमांक – 1 में न्यादर्श हेतु चयनित शोध क्षेत्र के शासकीय एवं निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की आकांक्षा स्तर का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि की जानकारी का संकलन किया गया है।

उपरोक्त सारणी क्रमांक – 1 के ऑकड़े यह दर्शाते है कि, शोध क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालयों पर न्यादर्श हेतु चयनित कुल 500 विद्यार्थियों में से निरंक शासकीय एवं 01 निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की आकांक्षा स्तर का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में 20 से कम अंक, 88 शासकीय एवं 93 निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की आकांक्षा स्तर का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में 20 से 30 के मध्य अंक, 117 शासकीय एवं 119 निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की आकांक्षा स्तर का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में 30 से 40 के मध्य अंक और 45 शासकीय एवं 37 निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की आकांक्षा स्तर का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में 40 से 50 अंक प्राप्त कर ली है।

इस प्रकार इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है, कि शोध क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में से 0.40 प्रतिशत निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की आकांक्षा स्तर का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में 20 से कम अंक, 35.20 प्रतिशत शासकीय एवं 37.20 प्रतिशत निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की आकांक्षा स्तर का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में 20 से 30 के मध्य अंक, 46.80 प्रतिशत शासकीय एवं 47.60 प्रतिशत निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की आकांक्षा स्तर का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में 30 से 40 के मध्य अंक और 18.19 प्रतिशत शासकीय एवं 14.80 प्रतिशत निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की आकांक्षा स्तर का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में 40 से 50 अंक प्राप्त कर ली है।

सारणी 2: शोध क्षेत्र के शासकीय एवं निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की आकांक्षा स्तर का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का सांख्यिकीय विश्लेषण

समूह		शासकीय	निजी
समूह की संख्या (N)		250	250
मध्यमान (M)		33.28	32.68
मानक विचलन (SD)		7.09	6.94
क्रान्तिक निष्पत्ति (C.R.)		0.95	
निष्कर्ष	0.05 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर नहीं है	
	0.01 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर नहीं है	

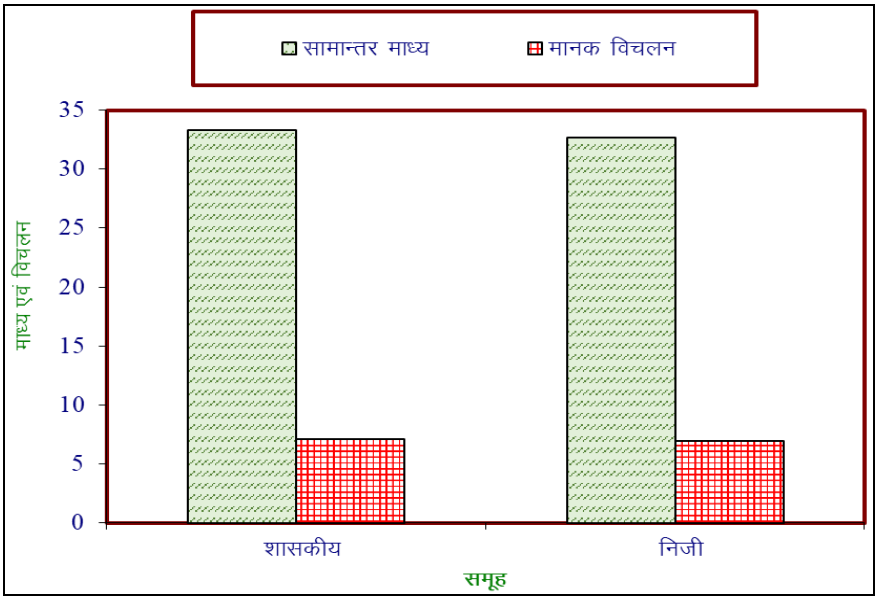

आरेख 1: शोध क्षेत्र के शासकीय एवं निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की आकांक्षा स्तर का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का सांख्यिकीय विश्लेषण

विश्लेषण एवं व्याख्या

उपर्युक्त सारणी में शोध क्षेत्र के शासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की आकांक्षा स्तर का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का स्तर औसत 33.28 तथा मानक विचलन 7.09 है। निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की आकांक्षा स्तर का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का स्तर औसत 32.68 तथा मानक विचलन 6.94 है। दोनों समूहों के मध्यमानों में पाये जाने वाले सार्थकता की जाँच के लिए क्रान्तिक अनुपात परीक्षण (C.R. Test) किया गया, जिसमें CR का मान 095 प्राप्त हुआ जो 0.05 सार्थकता स्तर के मान 1.64 तथा 0.01 सार्थकता स्तर के मान 2. 33 से कम है। अतः शोध क्षेत्र के शासकीय एवं निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की आकांक्षा स्तर का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। इस प्रकार शोधार्थी की परिकल्पना स्वीकार की जाती है।

अतः परिकल्पना सत्यापित होती है।

निष्कर्ष

किसी भी शोध कार्य से प्राप्त निष्कर्ष किये गये शोध कार्य को मान्यता प्रदान करते है। प्रस्तुत शोध के प्रदत्तों के सांख्यिकीय विश्लेषण एवं परिकल्पनाओं के परीक्षण से प्राप्त हुए तथ्यों के आधार पर प्राप्त शोध निष्कर्षो का विवरण निम्नानुसार हैं–

1. शोध क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में से 0.40 प्रतिशत निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की आकांक्षा स्तर का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में 20 से कम अंक, 35.20 प्रतिशत शासकीय एवं 37.20 प्रतिशत निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की आकांक्षा स्तर का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में 20 से 30 के मध्य अंक, 46.80 प्रतिशत शासकीय एवं 47.60 प्रतिशत निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की आकांक्षा स्तर का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में 30 से 40 के मध्य अंक और 18.19 प्रतिशत शासकीय एवं 14.80 प्रतिशत निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की आकांक्षा स्तर का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में 40 से 50 अंक प्राप्त कर ली है।
2. शोध क्षेत्र के शासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की आकांक्षा स्तर का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का स्तर औसत 33.28 तथा मानक विचलन 7.09 है। निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की आकांक्षा स्तर का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का स्तर औसत 32.68 तथा मानक विचलन 6.94 है।
3. शोध क्षेत्र के शासकीय एवं निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की आकांक्षा स्तर का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सन्दर्भ

1. अस्थाना, पंकज. माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की गणितीय उपलब्धि पर आकांक्षा स्तर, चिन्ता तथा अध्ययन की आदतों के प्रभाव का अध्ययन, शिक्षाशास्त्र, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर, 2006.
2. सिंह, राम बाबू – स्नातक स्तर पर कला वर्ग, विज्ञान वर्ग एवं वाणिज्य वर्ग के विद्यार्थियों की जीविका वरीयता, समायोजन तथा आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन, शिक्षाशास्त्र, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध, एम.जे.पी. विश्वविद्यालय, बरेली, 2012.
3. पाण्डेय, के.पी. – मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 1985.
4. गुप्ता एस.पी. – आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद संस्करण, 2001.
5. मेहता, सी. – नेशनल पॉलिसीर ऑफ एलिमेन्ट्री टीचर एजूकेशन इन इण्डिया, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली, 1970.
6. निगम, बी.के. तथा शर्मा, एस.आर. – भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं समस्यायें, (प्रथम संस्करण) कनिष्ठ प्रकाशन, नई दिल्ली, 1993.
7. सिडाना, अशोक कुमार एवं साहनी, सारिका – जयपुर और टोंक जिले के ग्रामीण उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत किशोर विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का अध्ययन Suraj Punj Journal For Multidisciplinary Research 2019;9(5):568-577.
8. कुशवाहा, उमाशंकर एवं श्रीवास्तव, डॉ. अखिलेश कुमार – सतना जिले में किशोरावस्था के छात्र व छात्राओं में मानवीय मूल्यों का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन International Journal of Applied Research 2021;7(1):400-403.